सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।

सन्निहित तीर्थ की गणना कुरुक्षेत्र के सर्वाधिक प्राचीन एवं पवित्र तीर्थों में की जाती है । वामन पुराण में उपलब्ध उल्लेख के अनुसार ब्रह्मा ने प्राचीन काल में इस सरोवर का विस्तार बताया था :

रन्तुकादौजसं यावत् पावनाच्च चतुर्मुखम् ।
सरः सन्निहितं प्रोक्तं ब्रह्मणा पूर्वमेव तु ।

(वामन पुराण, 1/5)

अर्थात् रन्तुक से लेकर ओजस तक, पावन से चतुर्मुख तक सन्निहित कहलाता था ।

इस सरोवर का आकार व परिमाण विभिन्न समयावधि में भिन्न-भिन्न रहा है । इसका जो परिमाण सृष्टि के आदि में था वह द्वापर और कलियुग में नहीं रहा । द्वापर और कलियुग में इसके परिमाण को व्यास ने इस प्रकार से बताया है :

कलिद्वापरयोर्मध्ये व्यासेन च महात्मना ।
सरः प्रमाणं यत्प्रोक्तं तत्छ्रणुध्वं द्विजोत्तमाः ।
विश्वेश्वरादस्थिपुरं तथा कन्या जरद्गवी ।
यावदोघवती प्रोक्ता तावत्सन्निहितं सरः ।

इस प्रकार से द्वापर और कलियुग में इसका परिमाण विश्वेश्वर से तथा कन्या जरद्गवी से ओघवती तक सीमित हो गया ।

वामन पुराण की एक कथा के अनुसार शिव ने ऋषियों को कहा कि वे इस तीर्थ में उनके लिंग की स्थापना करें । लेकिन ऋषि लोग लिंग को हिलाने में भी असमर्थ रहे तब शिव ने कृपा करके स्वयं ही इस तीर्थ में लिंग की स्थापना कर दी :

तमादाय महादेवः स्तूयमानो महर्षिभिः ।
निवेशयामास तदा सरःपार्श्वे तु पश्चिमे ।।

(वामन पुराण, 23/34)

वामन पुराण के उपर्युक्त वर्णन से सन्निहित तीर्थ में ही स्थाणु तीर्थ भी समाविष्ट हुआ प्रतीत होता है । इन दोनों तीर्थों के अलग होने तथा सन्निहित सरोवर के परिमाण के कम होने का उल्लेख भी वामन पुराण में ही मिलता है । वामन पुराण में उपलब्ध कथा के अनुसार शिव द्वारा शिवलिंग स्थापित किए जाने पर इसके माहात्म्य में इतनी अधिक वृद्धि हुई कि यहां आने वाला प्रत्येक मनुष्य स्वर्ग पद का अधिकारी बनने लगा । इस प्रकार से स्वर्ग में मनुष्यों की भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी । बढ़ते हुए मानव समुदाय को देखकर देवता लोग ब्रह्मा से मिले । ब्रह्मा ने देवताओं की प्रार्थना पर इन्द्र को आदेश दिया कि वे इस सरोवर को मिट्टी से भर दें । इस आज्ञा को पाकर इन्द्र ने सरोवर को एक सप्ताह निरन्तर धूलि की वर्षा कर भर दिया । इससे सरोवर का परिमाण कम हो गया । आदि तीर्थ धूलि से भरने से इसलिए बच गया क्योंकि लिंग को स्वयं महादेव ने धारण कर लिया था । जहां पर जल है वहीं पर आदि तीर्थ है ।

इस तीर्थ का धार्मिक महत्त्व महाभारत एवं वामन पुराण में विस्तार से वर्णित है । महाभारत में इसके महत्त्व के विषय में लिखा है :

सन्निहित्यामुपस्पृश्य राहुग्रस्ते दिवाकरे
अश्वमेध शतं तेन इष्टं भवति शाश्वतम् ।

(महाभारत, वन पर्व, 83/167)

अर्थात् सूर्य ग्रहण के अवसर पर इस तीर्थ का स्पर्श मात्र कर लेने पर शत अश्वमेधों के फल की प्राप्ति होती है । महाभारत में ही इस तीर्थ के महत्त्व के विस्तार में अन्यत्र लिखा है कि पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ, नदी तथा तड़ाग आदि भी हैं वे निसन्देह प्रत्येक मास सन्निहित सरोवर में आते हैं:

पृथिव्यां यानि तीर्थानि अन्तरिक्षचराणि च ।
नद्यो नदास्तडागाश्च सर्वप्रस्रवणानि च ।

(महाभारत, वन पर्व, 83/168)

इसी तीर्थ के महत्त्व के विषय में यह भी उल्लेख महाभारत में मिलता है कि यहां प्रत्येक मास ब्रह्मादि देवता तथा तपस्वी ऋषि मुनि भी एकत्रित होते हैं । स्त्री अथवा पुरुष के द्वारा किया गया कोई भी पाप कर्म इस सर में स्नान मात्र से नष्ट हो जाता है तथा व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है ।

पद्मपुराण में भी सूर्य ग्रहण के अवसर पर इस तीर्थ में किए गए श्राद्ध एवं स्नान का फल सहस्त्र अश्वमेध के समान बताया है :

अमावस्यां तथा चैव राहुग्रस्ते दिवाकरे ।
यः श्राद्धं कुरुते मर्त्यस्तस्य पुण्यफलं श्रृणु ।
अश्वमेधसहस्त्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ।
स्नातेव तदाप्नोति कृत्वा श्राद्धं च मानवः ।।

(पद्म पुराण, आदि खं., 27/82-83)

स्कन्द पुराण में इस का महत्त्व बताते हुए लिखा है :

यस्तत्र भोजयेद् विप्रं षड्रसं विधिपूर्वकम् ।
एकेन भोजितेनैव कोटिर्भवति भोजिता ।।

(स्कन्द पुराण 7/81)

अर्थात् इस तीर्थ में एक ब्राह्मण को भोजन करवाने से कोटिशः ब्राह्मणों को भोजन करवाने का फल मिलता है । स्कन्द पुराण में उपलब्ध वर्णन के अनुसार पाण्डवों ने अज्ञातवास के समय सन्निहित के दक्षिणी तट पर लिंग की स्थापना की थी ।

वामन पुराण में इस तीर्थ के सम्बन्ध में लिखा है कि इसी सरोवर में वह अण्डा विद्यमान था जिससे ब्रह्मा तथा अन्य सृष्टि उत्पन्न हुई :

यस्मिन् स्थाने स्थितं ह्यण्डं तस्मिन् सन्निहितं सरः ।
अण्डमध्ये समुत्पन्नो ब्रह्मा लोकपितामहः ।

(वामन पुराण, 22/35)

वामन पुराण में ही यह भी उल्लेख है कि ब्रह्मा की नाभि में पवित्र जल विद्यमान था, उसी पवित्र जल से यह सर पूर्ण रूप से भर गया था ।

इस सरोवर का पुनर्निर्माण एवं विकास भी कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा ही किया गया है । वर्तमान में इसकी लम्बाई 1500 फुट तथा चौड़ाई 550 फुट है । विकास मण्डल के सराहनीय प्रयास से तीर्थ यात्रियों के स्नानार्थ लाल पत्थर से निर्मित सुन्दर सीढ़ियां तथा सरोवर के चारों ओर चबूतरे का निर्माण किया गया है तथा पक्के घाट भी बनाए गए हैं । सन्निहित सरोवर की दक्षिणी दिशा में कमल कुंज विकसित किया गया है । इसी के तट पर ध्रुव नारायण मन्दिर के मध्य में भगवान चतुर्भुज नारायण का मन्दिर है । पूर्वी भाग में भक्त शिरोमणि हनुमान तथा सिंहवाहिनी दुर्गा के मन्दिर हैं और सरोवर के तट पर दुखभंजन मन्दिर है ।

इस सरोवर के समीप नागर शैली में निर्मित लक्ष्मी नारायण का एक अत्यन्त रमणीय मन्दिर कुरुक्षेत्र का वास्तुकला की दृष्टि से दुर्लभ मन्दिर है ।

इस तीर्थ में प्रत्येक सोमवती अमावस्या को विशाल मेला लगता है । सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु इस सरोवर पर पवित्र स्नान तथा पुण्य प्राप्ति के लिए एकत्रित होते हैं ।

इसके आसपास स्थित मन्दिरों में प्रात:काल एवं सायंकाल गूंजते शंखों का मधुर नाद और आरती के मधुर स्वर तथा पूजा में प्रयुक्त सुगन्धित सामग्री समग्र वातावरण को एक ऐसे दिव्य आध्यात्मिक परिवेश में ढाल देती है जो प्रत्येक मनुष्य को स्वत: ही अपनी ओर खींच लेता है ।